संस्थापित १८६७ ई०

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२४ ● अंक-१५ ● ०६ अप्रैल २०१९ चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी संवत् २०७६ ● दयानन्दाब्द १९६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३१२०

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर का आर्य महासम्मेलन, समारोहपूर्वक सम्पन्न

आर्य समाज ने राष्ट्र निर्माण के लिए आहूति दी -डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

राष्ट्र की संरचना के तीन मुख्य घटक होते हैं सीमाएँ, संस्कृति एवं समाज राष्ट्र रक्षा में जहाँ सैनिक सीमाओं की सुरक्षा करते हैं, यही संस्कृति एवं समाज व्यवस्था की सुरक्षा का दायित्व हमारा है। उक्त विचार जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्य महासम्मेलन कानपुर नगर में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी ने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दिव्य दयानन्द सरस्वती ने अपनी संपूर्ण शक्ति संस्कृति शिक्षा व समाज सुधार में लगायी है। आज भी आर्य समाज इसी दिशा में निरन्तर लगा हुआ है।

स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास वेत्ता पट्टाभि सीतारमैया ने कहा है कि स्वतंत्रता संग्राम में अस्सी प्रतिशत आर्य समाजी थे। आर्य समाज ने तब भी राष्ट्र निर्माण के लिए मूक आहुति दी और आज भी समाज निर्माण व सुधार के कार्य की मौन साधना में लगा हुआ है। सभा प्रधान जी ने अपने वक्तव्य में कहा हमें पुनः आज आर्य समाज को संगठित करना होगा, एक बार फिर हम आर्य समाज के प्रचार को जन–जन तक पहुंचाएं तभी हम सही मायने में आर्य कहाने के अधिकारी हैं।

इस अवसर पर सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए जिला प्रधान अशोक कुमार आनन्द ने कहा कि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य राष्ट्र का प्रहरी है। स्वामी दयानन्द जी ने हमें अपनी संस्कृति के मूल स्रोत वेदों की ओर लौटने का संदेश देकर हमें हमारी जड़ों से कभी अलग न होने का संदेश दिया है जिसका पालन हर भारतीय को करना चाहिए। आर्ष गुरूकुल एटा के प्राचार्य आचार्य डॉ० वागीश जी ने भी आर्य समाज के संगठन को मजबूत होने तथा वेदों को अपने जीवन धारण एवं महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

सभा का संचालन सभा मंत्री आनन्द जी आर्य ने किया। इस अवसर पर विधायक महेश त्रिवेदी, नगर के प्रमुख उद्योगपति मुरारीलाल अग्रवाल, आर्यकन्या इण्टर कालेज के प्रबन्धक शिवकुमार आर्य, चन्द्र कान्ता गेरा, अनिल चोपड़ा, अशोक कुमार पुरी, सुरेन्द्र कुमार गेरा, शुभ कुमार वोहरा, कैलाश मोंगा, वेद प्रकाश आर्य, हनुमान प्रसाद आर्य, सुभाष आर्य, विनोद कुमार आर्य, उदयवीर सिंह, सन्तोष आर्य, सन्दीप आर्य, सन्तोष अरोड़ा आदि उपस्थित रहे। मथुरा से पधारे उदयवीर सिंह जी ने राष्ट्र प्रेम एवं भक्तिभाव से भरे भजनों की प्रस्तुति देकर सबको भावविभोर कर दिया।

आर्य समाज के सम्बन्ध में एकांगी धारणायें क्यों?

भारत के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में आर्य समाज का अति ही महत्वपूर्ण योगदान होने से देश–विदेश के विद्वानों व विचारकों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक था। सभी ने इसके सम्बन्ध में समय–समय पर अपनी सम्पत्तियाँ प्रकट की है। उन सम्पत्तियों में अच्छी और बुरी दोनों ही प्रकार की हैं। सभी ने आर्य– समाज के सम्बन्ध में अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर ही अपने विचार प्रकट किये हैं। उनमें से अधिकांश ने आर्य समाज का गौरव गान करते इसे प्रतिष्ठा ही प्रदान की है। परन्तु सभी विद्वानों की सम्पत्तियों का अध्ययन करने के पश्चात् आर्य समाज के वास्तविक स्वरूप से परिचित व्यक्ति यही अनुभव करता है कि उनकी सम्मतियां अपने में अधूरी है और समाज के वास्तविक स्वरूप से कोसों दूर है।

लगभग सभी विद्वानों ने आर्य समाज के उद्देश्य व स्वरूप को भारत की सीमाओं में सीमित करने का प्रयास किया है जबकि स्वरूप व उद्देश्य एक देश, जाति से बन्धा न होकर समूची मानव जाति के कल्याणार्थ था। आर्य समाज का उद्देश्य है अर्थात् सबकी शारीरिक मानसिक व समाजिक उन्नति करना।" ऐसा महान उद्देश्य होते हुए भी विद्वानों ने फिर इसके साथ न्याय क्यों नहीं किया? और क्यों उनकी सम्मतियाँ इसके बारे में एकांगी रह गई?

आर्यसमाज के सम्बन्ध में सम्मति प्रकट करने वालों की अवस्था वास्तव में उन नेत्रहीन व्यक्तियों की भांति थी, जिन्होंने हाथी की प्रशंसा सुनकर उसे देखने का प्रयास किया और उत्सुकता में दौड़कर हाथी के अंगों से चिपट गये एवं अपने हाथों के द्वारा हाथी के स्वरूप को जानने का प्रयास किया। उनमें प्रत्येक ने हाथी के जिस अंग को जैसा अपने परीक्षण से जाना वैसा ही उसने प्रकट कर दिया। सभी अपनी–अपनी कल्पनाओं में सच्चे थे, परन्तु साथ ही

शेष पृष्ठ ५ पर

असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन की सूचना।

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण को सूचित किया जाता है, कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन दिनांक 21 अप्रैल, 2019 दिन रविवार (बैषाख कृष्ण द्वितीया) को प्रातः 11.00 बजे से प्रधान/का0 प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में गुरूकुल वृन्दावन, मथुरा में सम्पन्न होगा।

अतः आप सभी निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें। ऐजेण्डा डाक द्वारा प्रेषित किया जा चुका है। तथा इस अंक के पंज संख्या 7 पर प्रकाशित है।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती) सभा मन्त्री

सम्पर्क सूत्र –09837402192

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

सभ्य नेतृत्व ही सभ्य समाज का निर्माण कर सकता है

भारत वर्ष प्राचीन काल से ही विभिन्न विविधताओं के लिए जाना जाता है। उसने विभिन्न कालखण्डों में अनेक विभिषिकाओं को झेला है। उसने समय–समय पर अपनी विरासत को बरकरार रखने के लिए अनेक युद्धों एवं आक्रमणों को सहन किया है। लेकिन विशाल गुणग्राह्यता एवं उसकी समानता की परम्परा ने विभिन्न विपरीत संस्कृतियों को अंगीकार करके उसका सम्मान किया है। आजादी के बाद से राजसत्ता के लिए संघर्ष प्रारम्भ हो गया। जो संघर्ष देश तरक्की के लिए होना चाहिए था वह राज सिंहासन के इर्द–गिर्द घूमने लगा और उसने एक नये युग की शुरूआत की जो कि कुर्सीवाद की परिभाषा में समाहित हो गया। अनकों वादों के बाद कुर्सीवाद का आगमन सभी को आश्चर्यचकित करता है। समाज शास्त्रीयों ने समय–समय पर वादों का वर्गीकरण किया है। जो कि तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब होता है और उस वाद में समाज की एक नई परम्परा का प्रचलन दिखाई देता है। कुर्सीवाद के संघर्ष में हम कब अपने लक्ष्यों से भटक गये हमें पता ही नही चला और हम उसके आदी हो गये। देश की बात जैसे बेमानी हो गई तथा जो कुर्सी तक पहुंचा दे उसका कल्याण ही देश कल्याण हो गया। समाज में एक नई प्रकार की कार्य प्रणाली सोच का प्रादुर्भाव हुआ जिसका समाज पर विशेष प्रभाव पड़ा हमारी समानता की सोच को संकीर्ण कर दिया। हम केवल उसी के बारे में सोचने लगे जो हमें कुर्सी तक पहुंचा दे। उसी का परिणाम समाज के समय–समय पर देखने को मिलता रहा है जिसने भारत के सामजिक ढांचे की बुनियाद को हिलाकर रख दिया है।

उसकी मान्यताओं उसकी परम्पराओं, सभ्यताओं का जैसे मंजिल बनाया जाना आम बात हो गई। एक वर्ग को कुर्सी का पायदान समझकर नीतियों का निर्धारण किया जाने लगा जिससे समाज में आपसी वैमनस्यता, अलगाव की भावना को पैदा किया। समाज भयावह के दौर से गुजरता रहा फिर भी वह अपनी मूल जड़ों के कारण स्वयं को स्थापित करने में सक्षम रहा। समाज ने अपनी सामाजिक मान्यताओं को बरकरार रखने के लिए भरसक प्रयास किया। भारत हमेशा से खुशियों की तलाश में अपना सर्वस्व खोना पसन्द करता है। शायद उसी की इस आदत को इस देश में त्यौहारों का प्रचलन शुरू किया। इनका कारण जो भी रहा हो लेकिन उसने हमेशा नकारात्मक विचारों कुछ सकारात्मक सिखाने का प्रयास किया है। समाज में कुर्सी की सत्ता को हासिल करने के लिए समाज में विभिन्न प्रकार के कार्यों का क्रियान्वयन किया गया। भारत में प्राचीन परम्पराओं पर प्रतिबन्ध एवं अनेक आयोजनों पर शर्तों की बाध्यता ने समाज में एक बहस को जन्म दिया। जिस बहस ने समाज में एक विचलन सा पैदा किया।

सत्ता के लालच में कुर्सी के पुजारियों ने भारतीय परम्पराओं के अपमान को भी साधन बनाया। मात्र परम्पराओं के अपमान करने तक ही सीमित नहीं रहे अपितु अपने को गौरवान्वित महसूस करने लगें। जो जितना उसका अपमान करता है वह उतना ही सक्षम माना जाता है। कई बार इस नीति ने लोगों को सत्ता तक पहुंचाया वर्तमान में कुछ असामन्य घटनाओं ने समाज में एक नई परम्परा की शुरूआत की है। जो मात्र नई परम्परा का लेशमात्र चिन्ह है लेकिन उसकी बुनियाद तो सैकड़ो वर्षों पूर्व ही रक्खी गई थी उसी का निर्वाह मात्र किया गया था जिस प्रकार के लोग समाज में शासन करेगें उसी प्रकार की परम्पराओं का पालन किया जाएगा। यह नियम सर्वविदित है। सभ्य नेतृत्व ही सभ्य समाज का निर्माण कर सकता है।

–सम्पादक

गतांक से आगे ....

सत्यार्थ प्रकाश

अथाष्टमसमुल्लासारम्भः

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्चन्।।

—यजुः0 अ0 33 । मं0 43।।

जो सविता अर्थात् सूर्य्य वर्षादि का कर्त्ता, प्रकाशस्वरूप, तेजोमय, रमणीयस्वरूप के साथ वर्त्तमान, सब प्राणी अप्राणियों में अमृतरूप वृष्टि वा किरण द्वारा अमृत का प्रवेश करा और सब मूर्तिमान् द्रव्यों को दिखलाता हुआ सब लोकों के साथ आकर्षण गुण से सह वर्त्तमान, अपनी परिधि में घूमता रहता है किन्तु किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। वैसे ही एक-एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य प्रकाशक और दूसरे सब लोकलोकान्तर प्रकाश्य हैं। जैसे-

दिवि सोमो अधि श्रितः।। —अथर्व0 कां0 14। अनु0 1। मं0 1।।

जैसे यह चन्द्रलोक सूर्य से प्रकाशित होता है वैसे ही पृथिव्यादि लोक भी सूर्य के प्रकाश ही से प्रकाशित होते हैं। परन्तु रात और दिन सर्वदा वर्त्तमान रहते हैं क्योंकि पृथिव्यादि लोक घूम कर जितना भाग सूर्य के सामने आता है उतने में दिन और जितना पृष्ठ में अर्थात् आड़ में होता जाता है उतने में रात। अर्थात् उदय, अस्त, सन्ध्या, मध्यान्ह्, मध्यरात्रि आदि जितने कालावयव हैं वे देशदेशान्तरों में सदा वर्त्तमान रहते हैं अर्थात् जब आर्यावर्त्त में सूर्योदय होता है उस समय पाताल अर्थात् 'अमेरिका' में अस्त होता है और जब आर्यावर्त्त में अस्त होता है तब पाताल देश में उदय होता है। जब आर्यावर्त्त में मध्य दिन वा मध्य रात है उसी समय पाताल देश में मध्य रात और मध्य दिन रहता है।

जो लोग कहते हैं कि सूर्य घूमता और पृथिवी नहीं घूमती वे सब अज्ञ हैं। क्योंकि जो ऐसा होता तो कई सहस्त्र वर्ष के दिन और रात होते। अर्थात् सूर्य का नाम (ब्रध्नः) है। यह पृथिवी से लाखों गुणा बड़ा और क्रोड़ों कोश दूर है। जैसे राई के सामने पहाड़ घूमे तो बहुत देर लगती और राई के घूमने में बहुत समय नहीं लगता वैसे ही पृथिवी के घूमने से यथायोग्य दिन रात होते हैं; सूर्य के घूमने से नहीं।

जो सूर्य को स्थिर कहते हैं वे भी ज्योतिर्विद्यावित् नहीं। क्योंकि यदि सूर्य न घूमता होता तो एक राशि स्थान से दूसरी राशि अर्थात् स्थान को प्राप्त न होता। और गुरु पदार्थ बिना घूमे आकाश में नियत स्थान पर कभी नहीं रह सकता।

और जो जैनी कहते हैं कि पृथिवी घूमती नहीं किन्तु नीचे-नीचे चली जाती है और दो सूर्य और दो चन्द्र केवल जम्बूद्वीप में बतलाते हैं वे तो गहरी भांग के नशे में निमग्न हैं। क्यों? जो नीचे-नीचे चली जाती तो चारों ओर वायु के चक्र न बनने से पृथिवी छिन्न-भिन्न होती और निम्न स्थलों में रहने वालों को वायु का स्पर्श न होता। नीचे वालों को अधिक होता और एक सी वायु की गति होती। दो सूर्य चन्द्र होते तो रात और कृष्णपक्ष का होना ही नष्ट भ्रष्ट होता है। इसलिये ऐ भूमि के पास एक चन्द्र, और अनेक चन्द्र, अनेक भूमियों के मध्य में एक सूर्य रहता है।

प्रश्न- सूर्य चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं?

उत्तर- ये सब भूगोल लोक और इनमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती हैं क्योंकि-

एतेषु हीदꣳसर्वं वसुहितमेते हीदꣳसर्वं वासयन्ते तद्यदिदꣳसर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति।।

पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इनका वसु नाम इसलिये है कि इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा वसती हैं और ये ही सबको बसाते हैं। जिसलिए वास के निवास करने के घर हैं इसलिये इनकानाम वसु है। जब पृथिवी के समान सूर्य चन्द्र और रक्षत्र वसु हैं पश्चात् उनमें इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है? इसलिये सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है।

प्रश्न- जैसे इस देश में मनुष्यादि सृष्टि की आकृति अवयव हैं वैसे ही अन्य लोकों में होगी वा विपरीत?

उत्तर- कुछ-कुछ आकृति में भेद होने का सम्भव है। जैसे इस देश में चीने, हबसी और आर्य्यावर्त्त, यूरोप में अवयव और रंग रूप आकृति का भी थोड़ा-थोड़ा भेद होता है इसी प्रकार लोकलोकान्तरों में भी भेद होते हैं। परन्तुजिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोकों में भी है। जिस-जिस शरीर के प्रदेश में नत्रादि अंग हैं उसी-उसी प्रदेश में लोकान्तर में भी उसी जाति के अवयव भी वैसे ही होते हैं। क्योंकि-

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।। —ऋ0 मं0 10 । सू0 190।।

धाता परमात्मा (ने) जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्र, द्यौ, भूमि, अन्तरिक्ष और तत्रस्थ सुख विशेष पदार्थ पूर्वकल्प में रचे थे वैसे ही इस कल्प अर्थात् इस सृष्टि में रचे हैं तथा सब लोक लोकान्तरों में भी बनाये गये हैं। भेद किञ्चित्मात्रनहीं होता।

प्रश्न- जिन वेदों का इस लोक में में प्रकाश है उन्हीं का उन लोकों में भी प्रकाश वा नहीं?

उत्तर- उन्हीं का है। जैसे एक राजा की राज्यव्यवस्था नीति सब देशों में समान होती है उसी प्रकार परमात्मा राजराजेश्वर की वेदोक्त नीति अपने सृष्टिरूप सब राज्य में एक सी है।

प्रश्न- जब ये जीव और प्रकृतिस्थ तत्त्व अनादि और ईश्वर के बनाये नहीं हैं तो ईश्वर का अधिकार भी इन पर न होना चाहिये क्योंकि सब स्वतन्त्र हुए?

उत्तर- जैसे राजा और प्रजा समकाल में होते हैं और राजा के आधीन प्रजा होती है वैसे ही परमेश्वर के आधीन जीव और जड़ पदार्थ हैं। जब परमेश्वर सब सृष्टि का बनाने, जीवों के कर्मफलों के देने, सबका यथावत् रक्षक और अनन्त सामर्थ्य वाला है तो अल्प सामार्थ्य भी और जड़ पदार्थ उसके आधीन क्यों न हों? इसलिए जीव कर्म करने में स्वतन्त्र परन्तु कर्मों के फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से परतन्त्र हैं। वैसे ही ही सर्वशक्तिमान् सृष्टि, संहार और पालन सब विश्व का कर्त्ता है।

इसके आगे विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष विषय में लिखा जायेगा। यह आठवां समुल्लास पूरा हुआ।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे
सुभाषाविषिते सृष्ट्युत्पत्तिस्थितिप्रलयविषये
अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः।।8।।

क्रमशः

धरोहर क्रान्तिकारी राजगुरू

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ९८३७४०२१९२

सिर पर छोटे–छोटे बालों को ढकती हुयी काली टोपी, साधारण शरीर, खाकी नेकर के ऊपर सफेद कमीज, आयु २० वर्ष किन्तु जीवन के संघर्ष ने गम्भीर व वैरागी सा बना दिया था राजगुरू को। मराठों के स्वातन्त्र्य–प्रेम के अनुपम उदाहरण राजगुरु, बनारस के एक स्कूल में ड्रिल–मास्टर थे। भगतसिंह से पक्की दोस्ती थी, कहा करते थे–तेरा साथ अन्त तक नहीं छोड़ने वाला।

एक बार चन्द्रशेखर आजाद ने गोरखपुर के सरकारी खजाने की टोह लेने राजगुरु, भगतसिंह और शिववर्मा को भेजा। थके–हारे चौथे दिन जानकारी प्राप्त कर सो गये। राजगुरु की नींद कुम्भकर्णीय थी। आधी रात में शिववर्मा की नींद टूटी, उसे सर्प की फुफकार सुनाई दी। टार्च के प्रकाश में देखा, एक सर्प राजगुरु के सिरहाने फुफकार रहा है। शिव वर्मा और भगतसिंह ने राजगुरु को नीचे की ओर घसीटा और कहा– "जल्दी उठ, सर्प तेरे सिरहाने है।" "मुझे सोने दो" और करवट बदल कर राजगुरु सो गये। सर्प चला गया। दोनों राजगुरु की सुरक्षा में जागते रहे।

लाला लाजपतराय पर लाठियों से प्रहार का बदला राजगुरु, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद ने डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस को मारकर लिया। यह घटना १४ दिसम्बर १९२८ की है। तीनों लाहौर से निकल गये। भगतसिंह एक साहब बने, दुर्गाभाभी उनकी मेम बनी और राजगुरु बन गये नौकर। साधू वेश में आजाद। सभी प्रथम श्रेणी में बैठकर रेल से पुलिस के सामने ही कोलकाता जा पहुँचे। केन्द्रीय असेम्बली में बम फेकने पर भगतसिंह अपने साथी सहित वहीं पकड़े गये। राजगुरु पूना में पकड़े गये। लाहौर षड्यन्त्र केस में राजगुरु, भगतसिंह व सुखदेव को राष्ट्रभक्ति का सर्वोच्च सम्मान मिला– "फाँसी का पुरस्कार"।

२३ मार्च, १९३१ को राजगुरु–भगतसिंह, सुखदेव तीनों को एक साथ फाँसी दी गयी। वीर प्रताप के सम्पादक वीरेन्द्र लाहौर की सेन्ट्रल जेल में कैद थे, जहाँ तीनों को फाँसी दी गयी थी। उस दिन जेल में क्या कुछ घटा– इसका वर्णन वीरेन्द्र ने अपनी पुस्तक 'वे इन्कलाबी दिन' में दिया है– "२३ मार्च १९३१ किस प्रकार का मनहूस दिन था वह? ब्रिटिश साम्राज्य की बर्बरता और हमारे नेताओं की बेवफाई तीन शेरों को सदा की नींद सुला दिया। आप मेरा सौभाग्य समझें या दुर्भाग्य उस समय में जेल में ही था इसलिए इस करुणाजनक नाटक के अंतिम दृश्य को पूरी तरह तो नहीं किन्तु कुछ न कुछ तो देख ही सकता था।"

२३ मार्च को समाचार–पत्र मिला तो उसमें लिखा था कि भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के सम्बंधियों को सूचना दे दी गई है कि इन तीनों को २४ मार्च को फाँसी दी जायेगी। जेल के नियमानुसार गर्मी के मौसम में प्रातः सात बजे और सर्दी के मौसम में प्रातः ८ बजे फाँसी दी जाती है। जब हमने पढ़ा कि फाँसी २४ मार्च को मिलनी है तो हम समझते रहे कि नियमानुसार २४ मार्च को प्रातः ही यह कार्यवाही की जाएगी। किन्तु २३ मार्च दोपहर के दो बजे के लगभग वही नाई जो हमारे पास भी आता था, भागा–भागा आया और कहने लगा कि सब कुछ खत्म हो रहा है। सरदार जी कहते हैं कि सम्भवतः फाँसी आज ही दी जायेगी। उन्होंने आप दोनों को 'वंदे मातरम् कहा है।'

नाई की बात सुनने के बाद मैंने कहा कि वह तुरन्त चला जाए और भगत सिंह के पास उसकी जो भी निशानी पड़ी है वह ले आए। वह चला गया और आधे घंटे के बाद एक काले रंग का पैन और एक कंघी ले आया। कंघी के ऊपर भगत सिंह ने किसी चीज से अपना नाम लिखा हुआ था। कलम अहसान इलाही ने अपने पास रख ली और कंघी मैंने रख ली। हम अभी बातें कर रहे थे कि जेल के घड़ियाल ने ४ बजा दिए। उनके जीवन के केवल ३ घण्टे शेष रह गए थे।

जैसा कि जेल का निमय होता है कि फाँसी के समय शेष कैदियों को बंद कर दिया जाता था। प्रायः प्रतिदिन जेल का मुख्य वार्डन जिसका नाम सरदार चतुर सिंह था, सारे जेल के कैदियों को बंद करके सायं सात बजे में बंद करने आता था। उस दिन वह ४ बजे ही आ गया। हमने पूछा कि क्या बात है? वह उत्तर न दे सका और जोर–जोर से रोने लग गया। वह बता भी न सका कि बात क्या है।

७ बजे जब भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसीघर की ओर ले जाने के लिए उनकी कोठरियों से निकाला गया तो उन तीनों ने जोर–जोर से इन्कलाब जिंदाबाद के नारे लगाये जो षड्यन्त्र केस के कैदियों ने सुन लिए। उसके उत्तर में उन्होंने भी जोर–जोर से नारे लगाने शुरू कर दिये जो सारी जेल में फैल गये। उस रात सैंट्रल जेल में न तो किसी ने खान खाया और न कोई सोया। हम यह जानना चाहते थे कि फाँसी से पहले क्या हुआ और फाँसी के बाद क्या हुआ?

हमें यह चीफ वार्डन ही बता सकता था जोकि फाँसी के समय पास खड़ा रहता है। [illegible] सारी रात उसकी प्रतीक्षा करते रहे। प्रातः ७ बजे आकर उसने हमें खोल दिया।

हमारा प्रश्न यही था कि अंतिम समय में इन तीनों ने मौत का मुकाबला कैसे किया?

पहले तो वह बोला नहीं, जब उसने बोलना शुरू किया तो उसकी आंखों से आँसुओं की धारा बह निकली। वह सरकारी कर्मचारी था और उसका कहना था जब से उसने जेल में नौकरी की है उसने दर्जनों लोगों को फाँसी पर चढ़ते देखा है, परन्तु जिस दिलेरी और बहादुरी से ये तीनों फाँसी पर चढ़े हैं इसका दूसरा उदाहरण मिलना कठिन हैं। उसने हमें भगत सिंह के सम्बंध में एक घटना सुनाई– जब भगत सिंह फाँसी की पोशाक पहन कर तैयार हो गया और अपनी कोठरी से निकल कर फाँसीघर की ओर रवाना होने लगा तो चीफ वार्डन ने उससे कहा– "अब तो कुछ मिनटों का खेल रह गया है, अब तो 'वाहे गुरु' को याद करो।"

चीफ वार्डन को कहना था कि उसकी यह बात सुनकर भगत सिंह ने जोर से एक ठहाका लगाया कहने लगा –"सरदार जी! सारी आयु में तो मैंने याद नहीं किया बल्कि गरीबों और दलित लोगों पर अत्याचार ढहाए जाते हैं उन्हें देखकर मैंने उन्हें कई बार बुरा–भला कहा है। अब जबकि मौत मेरे बिल्कुल सामने खड़ी है, मैं उन्हें याद करूं तो क्या कहेगा कि यह नौजवान बेईमान भी है और बुजदिल भी। मेरे अरदास का उस पर क्या प्रभाव होगा और अगर मैं अब उसके सम्बंध में अपने रवैये में तबदीली करने में तैयार न रहूं तो कहेगा कि ईमानदार भी था और बहादुर भी।"

हय कहकर भगतसिंह अपनी निर्दिष्ट मंजिल की ओर चल पड़ा। उस समय वहां कई चेहरे थे, जेल अधिकारियों के भी जो किसी की जान ले सकते थे और एक कैदी का भी जो जान देने को तैयार था। परन्तु जेल अधिकारियों के चेहरे उदास थे और मरने वाले का चेहरा खुशी से चमक रहा था।

भगत सिंह ने जेल अधिकारियों को संबोधित करते हुआ कहा– "हमें हथकड़ी न लगाई जाये, न हमारे मुंह पर नकाब डाला जाये।" उसकी ये दोनों बाते मान ली गईं। भगत सिंह ने कोठरी को ओर देखा, यहाँ उसने अपनी जिंदगी के अंतिम दिन बिताये थे और फिर बाहर आ गये। सुखदेव और राजगुरु भी अपनी–अपनी कोठरियों से बाहर आ गये। तीनों ने एक–दूसरे को देखा, एक–दूसरे के गले मिले और फाँसी के तख्ते की तरफ चल पड़े। भगतसिंह बीच में थे। सुखदेव बायें और राजगुरु दायें।... भगत सिंह ने अपनी दायीं भुजा राजगुरू की बायीं भुजा में डाल दी और [illegible] क्षण के लिए तीनों रुके और फिर गाना शुरू कर दिया–

दिल से निकलेगी न मर कर भी वतन की उल्फत।
मेरी मिट्टी से भी खुशबू–ए–वफा आयेगी।

आगे–आगे कुछ वार्डन चले, इधर–उधर जेल अधिकारी और बीच में ये तीनों गाते हुए और झूमते जा रहे थे। एक वार्डन ने आगे आकर फाँसी घर का दवाजा खोला। अंदर लाहौर का अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर और जेल का एक अधिकारी मुहम्मद अकबर खड़ा था। उस अंग्रेज अफसर के पास जाकर भगत सिंह ने कहा–

"Mr. Magistrate, You are fortunate to able today to see how Indian Revolutionaries can embrace death with pleasure for the sake of their supreme ideal."

"मैजिस्ट्रेट साहिब आप भाग्यशाली हैं कि आपको अपनी आँखों से यह देखने का अवसर मिल रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह सहर्ष अपने महान उद्देश्य के लिए मृत्यु को गले लगा सकते हैं।"

इसके बाद तीनों उस प्लेटफार्म पर चढ़ गये जहाँ के तख्ते पर लटक रहे थे। तीनों उसके नीचे जाकर खड़े हो गये, अपने हाथों से फंदे को पकड़ा और गले में डाल दिया। भगत सिंह को इसमें कुछ थोड़ी सी कठिनाई पेश आयी उसके पास खड़े उस जल्लाद को कहा कि तनिक इस फंदे को ठीक कर दें।... जल्लाद ने भी ऐसे सपूत को कभी नहीं देखे होंगे, ऐसी आवाज पहले कभी न सुनी होगी। उसने आगे बढ़कर तीनों के फंदे ठीक कर दिये और चरखड़ी घुमाई। तख्त गिरा और ये तीनों भारत माँ के चरणों में अर्पित हो गये। उस समय शाम के ७ बजकर ३३ मिनट हुये थे। उस दिन भगतसिंह की जिन्दगी के २३ वर्ष ५ महीने २६ दिन पूरे हुये थे। भारत की क्रान्ति का एक अध्याय समाप्त हो गया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के ग्रन्थ रत्न

प्रस्तुति– हरीश कुमार शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने २३ छोटे–बड़े की रचना की। महर्षि दयानन्द के गन्थों की तालिका–

१. ऋग्वेद भाष्य, २. यजुर्वेद भाष्य, ३. यजुर्वेद भाषा भाष्य, ४. ऋग्वेदादि भाष्य भमिका, ५. सत्यार्थ प्रकाश, ६. संस्कार विधि, ७. आर्यर्भि विनयः, ८. पञ्च महायज्ञ विधि, ६. संस्कृत वाक्य प्रबोध, १०. व्यवहार भानु, ११. काशी शास्त्रार्थ, १२. वेद विरुद्ध मत खण्डन, १३. शिक्षा पत्री व्यान्त निवारण, १४. भ्रुयोन्छेदन, १५, अनुभुयोच्छेदन, १६. भ्रान्ति निवारण, १७. वेदान्त ध्वान्त निवारण, १८. सत्य धर्म विचार, १६. आर्योद्देश्य रत्न माला, २०. गो करुणानिधि, २१. अष्टाध्यायी भाष्य, २२. वेदांग प्रकाश, २३. स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश।

इन ग्रन्थ रत्नों के अतिरिक्त महर्षि ने स्वीकार पत्र के नाम से अपना वसीयतनामा तथा आर्य समाज के नियमों की रचना की थी। अब हम संक्षेप में विचार करेंगे कि इन ग्रन्थों को किन परिस्थितियों में और क्यों लिखना पड़ा।

१. वेद भाष्य –पुरा काल से ऋक्, यजु, साम अथर्ववेद संहिता को अपौरुषेय एवं ईश्वरीय ज्ञान के रूप में ऋषि–मुनियों ने मान्यता दी है। महर्षि मनु ने 'वेदों ने खिलो धर्म मूलम्' कहकर इसे समस्त धर्मों (कर्त्तव्यों) का मूल कहा है। इतना ही नहीं वरन् इसे समस्त ज्ञान–विज्ञान का मूल माना था। सभी क्रान्तदर्शी ऋषियों ने इसकी स्वतः प्रमाण कोटि की गणना की और अपने उच्चतम ग्रन्थों को भी परतः प्रमाण कोटि में रखा था। जब तक लोग वेद ज्ञान के अनुरूप आचरण करते रहे हैं तब तक कल्याण का साम्राज्य रहा है किन्तु वेदों के छोड़ने से नाना प्रकार के भेद उत्पन्न हो गये। आर्य जाति की गिरावट का मुख्य कारण वेदों का अनध्याय एवं उपेक्षा ही रहा है। ईश्वर के स्थान पर नाना प्रकार के जड़देवों की पूजा, अनेकानेक मत–मतान्तरों का प्रजनन एवं अनेक रूढ़ियों तथा अन्ध विश्वासों में ग्रस्त हो जाना वेद की शिक्षाओं से हटने का ही दुष्परिणाम था।

महर्षि दयानन्द ने इन परिस्थितियों का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया था और उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से जान लिया था कि इस भूतल पर वेद को पुनः प्रतिष्ठापित करने से ही मानव जाति का परम कल्याण हो सकता है। इसलिए महर्षि ने वेदों का भाष्य किया। महर्षि के काम में सायण, माधव आदि आचार्यों के वेद भाष्य विद्यमान थे किन्तु इन आचार्यों ने वेद भाष्य में प्राचीन शैली का परित्याग कर संकुचित, साम्प्रदायिक, एकाङ्गों एवं यज्ञपरक अर्थ करके वेद की गरिमा नष्ट कर दी थी और मैक्समूलर, विल्सन, कीथ आदि पाश्चात्य विद्वानों ने भी इन्हीं आचार्यों के भाष्यों को आधार बनाकर तथा पक्षपातारूढ़ होकर आंग्ल भाषा में वेदों का अनुवाद किया जिसमें वेदों के विरुद्ध अनेक वादों की परिकल्पना कर ली गयी थी। इसके निराकरण हेतु ऋषि को वेद भाष्य करना पड़ा।

२. ऋग्वेद तथा यजुर्वेद भाष्य– महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद के यथार्थ स्वरूप की प्रदर्शित करने हेतु प्राचीन ऋषियों की शैली के अनुसार (नैरुक्तिक प्रक्रियानुसार) वेदों का भाष्य किया। महर्षि ने सम्पूर्ण यजुर्वेद का भाष्य किया और ऋग्वेद के ७ मण्डल ६१ सूक्त मन्त्र २ तक ही किया है। ऋषि दयानन्द अपने जीवन में इसे समाप्त नहीं कर पाये। इन भाष्यों में ऋषि ने मूल मन्त्र, पद पाठ, संस्कृत के पदार्थ भाष्य, अन्वय और भावार्थ देकर पुनः आर्य भाषा में अन्वयानुसार अर्थ और भाषार्थ दे दिया है।

३. यजुर्वेद भाषा भाष्य– इसमें ऋषि दयानन्द रचित संस्कृत भाग को हटाकर केवल भाषा में अन्वयानुसार ही पदार्थ और भावार्थ संकलित किया गया है।

४. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका–ऋषि दयानन्द जिस वेद भाष्य की रचना कर रहे थे उसकी यह भूमिका है। यह सम्पूर्ण संस्कृत में है और इसका अनुवाद आर्य भाषा में भी किया गया है। वेद की उत्पत्ति, रचना, प्रामाण्य, अप्रामाण्य वेदोक्त धर्म, वेद में विज्ञान का मूल आदि अनेक विषयों पर गम्भीरतापूर्वक स्पष्ट विचार किया गया है। पूर्व के वेद भाष्यकारों ने अनेक अनार्ष मतों का विवेचन करके सप्रमाण वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। वेद के सिद्धान्तों को समझाने के लिए यह सम्पूर्ण ग्रन्थ है। एतद्देशीय योगी अरविन्द तथा प्रो० मैक्समूलर आदि प्राश्चात्य विद्वानों पर इस अपूर्व ग्रन्थ का भारी प्रभाव पड़ा है।

५. सत्यार्थ प्रकाश– ऋषि की यह अमर कृति एक युगान्तरकारी पुस्तक है। उसने भातवर्ष में जनता की विचारधारा को ही परिवर्तित कर दिया है। हिन्दी भाषा के इतिहास में कोई ऐसा ग्रन्थ नहीं है जिसका समस्त प्रान्तीय भषाओं एवं अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद होकर अनेक संस्करणों में प्रकाशन हुआ हो। इसे हिन्दी भाषा का अपूर्व ग्रन्थ कहा जाय तो अत्युक्ति होगी।

महर्षि दयानन्द ने अपने इस अपूर्व ग्रन्थ में समस्त मतमतान्तरों का आलोकन किया है और उनके अवैदिक मन्तव्यों पर गहरा प्रहार किया है। इस आलोचना में ऋषि ने अपने व पराये का विभेद किंचिन्मात्र नहीं किया है, बल्कि निष्पक्ष होकर निर्भीकतापूर्वक युक्तियुक्त आलोचनाएँ की हैं।

सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में ऋषि लिखते हैं कि–

''मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है......

यद्यपि मैं आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुआ हूँ तथापित जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न करके यथा तथ्य का प्रकाश करता हूँ, वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नति वालों के साथ बर्त्तता हूँ. ....

क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति, मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने पर तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता परन्तु ऐसी बात मनुष्यपन से बाहर है।'' उपर्युक्त उद्धरण से ऋषि का उद्देश्य स्पष्ट प्रकट हो जाता है।

इस ग्रन्थ में दस समुल्लास पूर्वार्द्ध के मण्डनात्मक विशेष्ज्ञ हैं जिनमें ईश्वर के नामों की व्याख्या, सन्तानों की शिक्षा, पठन–पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम, विवाह और गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ और संन्यास, राजधर्म, वेदेश्वर विषय, जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय, विद्याऽविद्या, बन्धोमोक्ष, आचार–अनाचार एवं भक्ष्याभक्ष्य पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है।

ईसाई, मुसलमानों एवं नास्तिकों द्वारा वैदिक धर्मियों को लज्जित किया जा रहा था और भारतधर्मी उनका युक्तियुक्त प्रत्युत्तर देने में सर्वथा असमर्थ से लगते थे। अतः वे हीन भावना से ग्रसित होते जा रहे थे परिणामस्वरूप राम–कृष्ण को मानने वाली अगणित सन्तानें स्वधर्म को तिलांजलि देकर धड़ाधड़ ईसाई और मुसलमान बनती चली जा रही थीं। इस दुरवस्था को दयानन्द ने देखा था, इसीलिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध में एकादश समुल्लास भारतवर्ष में प्रचलित अवैदिक मतमतान्तरों, १२वें जैन और बौद्ध नास्तिक मतों की सप्रमाण आलोचना की। तेरहवें और चौदहवें समुल्लास में क्रमशः। ईसाईयों और मुसलमानी मतों की चर्चा की। सत्यार्थ प्रकाश के दस समुल्लासों को पढ़कर जहाँ आर्य बन्धुओं को अपनी त्रुटियों का बोध हुआ वहाँ शेष चार समुल्लासों को पढ़ अवैदिक मतों की भ्रांतियों की जानकारी करायी। सत्यार्थ प्रकाश के पूर्व विद्यार्थियों के ललकारने पर जहां आर्य बन्धु मुंह छिपाते फिरते थे वहां सत्यार्थ प्रकाश रूपी अमोघ शस्त्र प्राप्त हो जाने पर मुद्दा सूत्रों के अनुसार गर्भाधान से अन्तेष्टि पर्यन्त १६ संस्कारों को वैदिक रीत्यनुसार करने की पद्धति और वर्णों और आश्रमों के नित्य कर्मों के इस ग्रन्थ में विधान से सिर ऊँचा किया। इस ग्रन्थ की रचना संवत् १६३२ तदनुसार सन् १८७५ ई० में हुई थी।

७. आर्याऽभिविनयः इस ग्रन्थ की भूमिका में महर्षि ने लिखा है कि–'' इस ग्रन्थ से तो केवल मनुष्यों को ईश्वर का स्वरूप, ज्ञान और भक्ति, धर्म निष्ठा, व्यवहार शुद्धि इत्यादि प्रयोजन सिद्ध होंगे, जिससे नास्तिक और पाखण्ड मतादि अधर्म में मनुष्य लोग न फंसें। किंचित् सब प्रकार के मनुष्य अत्युत्तम हों और सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की कृपा सब मनुष्यों पर हो जिससे सब मनुष्य दुष्टता को छोड़कर श्रेष्ठता को स्वीकार करें''। इससें ऋषि ने ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना के लिए चारों वेदों के १०८ मन्त्रों का संग्रह करके उनको अर्थ सहित दिया है। रचना १६३२ वि. सं. में हुई है।

८. पंच महायज्ञ विधि : इसमें ऋषि ने ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या), देवयज्ञ (अग्निहोत्र), भूतयज्ञ (बलिवैश्वदेव), पितृयज्ञ और अतिथियज्ञ इन पाँच महायज्ञों के करने की विधि और मन्त्रों पर संस्कृत भाष्य और सरल अनुवाद भी दिया है।

६. संस्कृत वाक्य प्रबोध : आर्य समाज के एक उपनियम ''प्रत्येक आर्य को संस्कृत व आर्य भाषा जाननी चाहिए'' की पूर्ति के लिए संस्कृत की आरम्भिक शिक्षा के लिए व्यावहारिक विषयों पर सरल संस्कृत वाक्यों द्वारा शिक्षा दी गयी है। इससे संस्कृत वाक्यों का सुगमता से बोध हो जाता है।

१०. व्यवहार भानु– बालकों को शिष्ट, आर्य व्यवहार की शिक्षा देने और अज्ञान एवं कुशिक्षा को निवारण करने हेतु इस ग्रन्थ की रचना महर्षि ने की है और इस ग्रन्थ की भूमिका में लिखा है कि ''मैं मनुष्यों को उत्तम शिक्षा के अर्थ सब वेदादि शास्त्र और सत्याचारी विद्वानों की रीति से युक्त इस व्यवहार भानु ग्रन्थ को बनाकर प्रकट करता हूं कि जिसको देख–दिखा, पढ़–पढ़ाकर मनुष्य अपने और अपनी सन्तान तथा विद्यार्थियों का आचार अत्युत्तम करें कि जिससे आप और वे सब दिन सुखी रहें। इस ग्रन्थ का रचना काल फाल्गुन शुक्ल १६३६ वि०सं० काशी है।

१. काशी शास्त्रार्थ : इसमें काशी में महर्षि दयानन्द के साथ मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में भी विशुद्धानन्द आदि पौराणिक विद्वानों से जो ऐतिहासिक शास्त्रार्थ १८६६ ई० में हुआ था उसका विवरण दिया गया है। यह ग्रन्थ संस्कृत में है और इसका भाषानुवाद भी साथ ही है।

१२. वेद विरुद्ध मत खण्डन– इस ग्रन्थ में बल्लभाचार्य आदि मतों के प्रति प्रश्न और उसका खण्डन किया गया है। यह ग्रन्थ संस्कृत में है और इसका अनुवाद हिन्दी में श्री पं० भीमसेन शर्मा ने किया है।

१३. शिक्षापत्री ध्वांत निवारण– इस ग्रंथ में महर्षि ने सहजानन्द आदि के मतों का खण्डन किया है। यह ग्रंथ भी संस्कृत में है। इसका हिन्दी अनुवाद ''स्वामी नारायण मत खण्डन'' के नाम से प्रसिद्ध है।

१४. भ्रमोच्छेदन–इस ग्रन्थ में बनारस के राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द की ओर से श्रीस्वामी विशुद्धानन्द की प्रश्नावली के कारण उत्पन्न हुए भ्रम को दूर किया गया है। उपर्युक्त भ्रमोच्छेदन के उत्तर में राजाजी के दूसरे निवेदन के शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ १ का शेष

आर्य समाज के सम्बन्ध में एकांगी .....

हाथी के स्वरूप के संबंध में सभी की कल्पनायें सत्यता से कोसों दूर थीं। इसी प्रकार आर्य समाज की जो–जो गति विधि जिस–जिस विद्वान् के सन्मुख आई उसी के आधार पर उसने इसके बारे में अपनी सम्मति प्रकट कर दी। आर्यसमाज के समूचे स्वरूप को वह देखा ही नहीं या आर्यसमाज अपने वास्तविक स्वरूप को उनके सन्मुख प्रस्तुत करने में असमर्थ रहा। उदाहरणार्थ जन्म लेते ही जब आर्य समाज ने अवतारवाद, मूर्ति पूजा और धर्म के नाम पर चल रहें पाखंडों का खण्डन किया तो अनेकों अन्धविश्वासी लोगों ने आर्यसमाज को 'नास्तिक एवं अधार्मिक संस्था' के नाम से घोषित किया। और सर्वत्र उनके संस्थापक तथा प्रचारकों को गालियों, पत्थरों, डण्डों आदि से स्वागत किया। भारत के प्रगतिशील देश–भक्तों ने जब इसे जातपात, छूत–छात, बाल–विवाह, अनमेल विवाह पर्दा–प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों का विरोध करते देखा तो उन्होंने इसे 'समाज सुधारक संस्था' नाम से सुशोभित किया। शिक्षा शास्त्रियों ने जब आर्यसमाज को आदर्श गुरूकुलों, स्कूलों व कालेजों की स्थापना करते देखा तो उन्होंने इसे 'शिक्षा–शास्त्री' की उपाधि से सुशोभित किया। देश की जारियों, अबलाओं, विधवाओं ने जब इसे स्त्रियों को वेद–शास्त्र पढ़ाते, वनिता आश्रम स्थापित करते, विधवा–विवाह कराते देखा तो उन्होंनं इसे ''मातृ–शक्ति'' का उद्वारक कहकर पुकारा। दलितों व अछूतों को गले लगाते तथा उने साथ प्रीतिभोज करते जब लोगों ने देखा तो उन्होंने इसे 'पतितपावन' के रूप में देखा।

भारत के स्वतंत्रता सेनानियों ने जब इसके विद्वानों, उपदेशकों व लेखकों को देश–भक्ति स्वतंत्रता, स्वदेशी, स्व–भाषा, स्व–संस्कृति के गौरव गान करते, राष्ट्रपिता स्व० महात्मा गांधी जी के संकेत पर विदेशियों की जब को भरते और मातृ–भूमि पर अपनी आत्म आहुति देते देखा तो उन्होंने इसे 'राष्ट्रीय चेतना' व स्वतंत्रता का अग्रदूत' कहने में अपना गौरव अनुभव किया, दूसरी ओर जब देश के नेताओं ने इसे विधर्मीयों के साथ शास्त्रार्थ करते और उनका धर्म परिवर्तन करते देखा, तो उन्होंने इसे 'साम्प्रदायिक संसाी' कहकर पुकारा। इस प्रकार जिसने आर्य समाज को जिस रूप में देखा वैसा ही उसने इसे प्रकट कर दिया। किसी ने भी इसकी समस्त गतिविधियों के पीछे छिपी आत्मा को देखने का प्रयास ही नहीं किया।

आज तक आर्य समाज की अधिकांश गतिविधियां भारत की सीमाओं तक सीमित रहीं इसीलिए विद्वानों ने इसे एक देशीय संस्था के रू'प में देखा। जब आर्यसमाज का सार्वदेशिक स्वरूप उनके सन्मुख आया ही नहीं तो फिर यदि उन्होंने इसके बारे में अधूरी धारणायें बनाई तो इसमें उनका दोष ही क्यों था?

आर्यसमाज अपना सर्वहितकारी सार्वदेशिक स्वरूप जनता के सन्मुख आज तक क्यों नहीं उपस्थित कर सका? इस प्रश्न का यही उत्तर है कि आज तक इसको अपने वास्तविक स्वरूप को प्रकट करने का अवसर ही प्राप्त न हो सका अब तक इसकी अवस्था उस अभागे किसान की भांति रही है जो बड़े चाव से एक दिन अपने खेत में बीजारोपण करने गया, परन्तु जब खेत पर जाकर उसने देखा कि उसमें घास, झाड, झंझाड़ भरे थे तो उसने उसमें बीजारोपण करना ठीक न समझ, घास, झंझाड को ही पहिले साफ करना अपना कर्तव्य समझा। ठीक उसी प्रकार आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जब संसार के कल्याणार्थ मैदान में उतरे तो उस समय भारत के पैरों में विदेशियों की दासता में रहने के कारण आर्य जाति अपने स्वरूप को ही भूल चुकी थी, उसे अपनी भाषा, धर्म, संस्कृति, साहित्य, इतिहास सभी से आस्था उठ चुकी थी, उसमें आत्महीनता का भाव उदय हो चुका था और विधर्मी लोग दिन दहाड़े इसके धर्म एवं महापुरूषों की मजाक उड़ाकर इसका सामूहिक रूप से धर्म परिवर्तन कर रहे थे, औ र विदेशी सरकार लार्ड मैकाले की योजनानुसार इसे समूल नष्ट करने का कुचक्र चला रही थी। ऐसी भयावह स्थिति मं महर्षि दयानन्द ने विवश होकर भारत की ज्वलंत समस्याओं को पहिले हल करना उचित समझा, क्योंकि उनकी दृष्टि में यदि वह अपनी कल्पनानुसार भारत में एक मानवीय राष्ट्र को जन्म दे सके, तो फिर समूचे संसार में अपनी सर्वहितकारी सार्वदेशिक योजनाओं को मूर्तरूप देना कठिन नहीं होगा।

गत सौ वर्षों से आर्य समाज लगातार अपनी वास्तविक योजनाओं के बीजारोपण के लिए भूमि तैयार करता आ रहा है। अपने लक्ष्य में यह पूर्णतः सफल हो गया यह कहना तो कठिन है परन्तु इस के सतत पुरूषार्थ व प्रयास का यह परिणाम अवश्य निकला है कि आज से सौ वर्ष पूर्व इसने धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में जो नारे लगाये थे और जिनका सर्वत्र घोर विरोध हुआ था उन्हें आज देश की जनता व सरकार दोनों ने नतमस्तक होकर स्वीकार कर लिया है। और वह अब यह अनुभव कर हरें हैं कि यदि भारत में आर्य समाज का जन्म न हुआ होता तो आज भारत का यह स्वरूप न होता। आर्यसमाज के शास्त्रार्थों से प्रभावित आज विधर्मियों ने भी अपने धर्म–ग्रन्थों के अर्थ बुद्धि परक करने प्रारम्भ कर दिये हैं। देश के कर्णधार आज यह अनुभव कर रहे है कि जन्म, जाति, भाषा, प्रान्त, धर्म आदि पर आधारित जो संकीर्ण साम्प्रदायिकक्तायें देश की एकता व सुरक्षा के लिए खतरा बनी है उनसे देश को यदि कोई छुटकारा दिला सकता है तो वह केवल आर्य समाज है।

वास्तव में आज समय आया है आर्य समाज को अपनी मानव कल्याणकारी योजनाओं को मूर्तरूप देने का। भारत ही नहीं अपितु भौतिकवाद व भोगवाद से पीड़ित पाश्चात्य जगत् भी अज महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म व संस्कृति की शरण में आकर सुख और शान्ति की प्राप्ति के लिए लालायित हो रहा है।

आशा ही नहीं अपितु दृढ़ विश्वास है कि आर्य समाज अपनी जन्म शताब्दी के पुनीत पर्व पर अपने वास्तविक स्वरूप को प्रकट करेगा और अपनी सार्वदेशिक सर्वहितकारी योजनाओं को प्रस्तुत करते हुए महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने की प्रतिज्ञा लेगा, और ऐसा समय उपिस्थत करेगा जब कि देश–विदेश के विद्वान् इसके सम्बन्ध में अपनी एकांगी धारणाओं को बदल इसके मानव कल्याणकारी स्वरूप के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट करने पर विवश हो जाय।

पृष्ठ ४ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती के....

उत्तर में महर्षि दयानन्द के शिष्य श्री पं० भीमसेन शर्मा का उत्तर 'अनुभ्रमोच्छेदन' के नाम से छपा है।

१५. भ्रान्ति निवारण– इस ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य पर संस्कृत कालेज कलकत्ता के स्थानापन्न प्राचार्य श्री पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न के किये गये भ्रान्तियुक्त आक्षेपों का युक्तियुक्त खण्डन किया गया है। यह ग्रन्थ भी संस्कृत में है, साथ ही हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है।

१६. वेदान्त ध्वान्त निवारण– इस ग्रन्थ में नवीन वेदान्त के मत की अच्छे प्रकार विवेचना की गयी है।

१७. सत्य धर्म विचार– (मेला चान्दपुर)–इस ग्रन्थ में चान्दपुर मेले में हुए मौलवी कासिम तथा पादरी स्काट आदि से हुए प्रश्नोत्तर का उल्लेख है। यह प्रसिद्ध मेला सत्य निर्णय हेतु मार्च १८७७ ई० में आयोजित किया गया था, जिसमें विपुल संख्या में लोग विद्यमान थे किन्तु कोई निर्णय लिये बिना मेला समाप्त कर दिया गया।

१८. आर्योद्देश्य रत्न माला– इस ग्रन्थ में महर्षि ने आर्यों के १०० उद्देश्यों का संग्रह किया है और उसकी परिभाषा वर्णित की है।

१९. गोकरूणा निधि– महर्षि दयानन्द ने इस ग्रंथ में भी आदि उपकारी पशुओं का वध बन्द करने और उसके पालन पर बल दिया है। गौ आदि पशुओं की ओर से एक प्रकार से मार्मिक अपील है। इसके अन्त में गोकरूणादि रक्षिणी सभा की योजना भी सम्मिलित है।

२०. वेदाङ्ग प्रकाश– इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द ने व्याकरण के सूर्यदण्डी विरजानन्द सरस्वती से प्राप्त आर्ष ज्ञान परिचतीय व्याकरण के प्रक्रिया भाग को स्पष्ट करने के लिए लौकिक और वैदिक व्याकरण के अंशों को एक साथ लेकर भाषा में व्याकरण के विषय को अति सुगम कर दिया है। सिद्धान्त कौमुदी आदि अनार्ष ग्रन्थों में आये अनेक अवैदिक, अनार्ष बातों को दूर करके व्याकरण को स्वच्छ कर दिया है और भट्टोजी दीक्षित आदि वैयाकरणों की अनेक त्रुटियों को भी दर्शाया है। वेदाङ्ग प्रकाश में वेदर्थ को स्पष्ट करने वाले निम्नलिखित ग्रन्थों का समावेश है–

१. वर्णोच्चारण शिक्षा, २. नामिक, ३–सन्धि विषय, ४. कारकीय, ५. समासिक, ६. सीवर, ७ आख्यातिक, ८. पारिभाषिक, ९. स्त्रैण तद्धित, १०. धातु पाठ, ११. अव्ययार्थ, १२. गण पाठ, १३. उणादि कोष, १४. निघंटु, १५. निरुक्तम्।

इन खण्डों में पठन–पाठन का एक विशेष क्रम है, उस क्रम से व्याकरण, संस्कृत विद्या और वेद विद्या का विशेष रूप से बोध हो जाता है।

२१. अष्टाध्यायी भष्यम्– पाणिनीय अष्टाध्यायी पर सूत्र क्रमानुसार महर्षि दयानन्द का अति उत्तम भाष्य है। इसका प्रकाशन उनके जीवन काल में न हो सका था, लाहौर के कवि डा० पण्डित रघुवीर, एम०ए०डी० लिट द्वारा सम्पादित कराकर परोपकारिणी सभा ने इसको दो भागों में प्रकाशित किया है। इस भाष्य में महर्षि ने दीक्षित और काशिकाकार जयादित्य आदि को व्याकरणविषयक अनेक त्रुटियाँ दर्शायी हैं। संस्कृत व्याकरण के क्षेत्र में यह अद्भुत ग्रन्थ है।

२२. स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश – महर्षि दयानन्द ने अपने मन्तव्यों–अमन्तव्यों के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में तथा पृथक् भी इस ग्रन्थ की रचना की है। ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में उल्लिखित शब्दों का किन अर्थों में प्रयोग इसको पढ़ने से स्पष्ट रुपेण विदित हो जाता है।

२३. स्वीकार पत्र (वसीयतनामा)– महर्षि दयानन्द ने २७ फरवरी १८८३ को तेइस सज्जन आर्य पुरुषों की सभा को अपने वस्त्र, पुस्तकें, धन और यन्त्रालय आदि का अधिकार लिख दिया था और सभा का अध्यक्ष उदयपुराधीश श्रीमान् महाराजाधिराज १०८ श्री सज्जन सिंह को निश्चित किया था। इस सभा के पदाधिकारियों और सदस्यों में लाला मूलराज एम०ए० लाहौर, कविराज श्यामल दास मेवाड, पंडित गोपाल राव हरिदेशमुख पूना, जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे पूना तथा पं० श्याम जी कृष्ण वर्मा प्रो० संस्कृत युनिवर्सिटी आक्सफोर्ड, लंदन आदि थे, नियुक्त किये गये थे।

२४. आर्य समाज के नियम– महर्षि दयानन्द ने अपने उत्तराधिकारी आर्य समाज के नियम को पृथक् रूप से छपवा लिया था।

मानव का दूसरा शत्रु है अन्याय

–डॉ० आनन्द सुमन सिंह

आज प्रतिदिन मानव समाज के सदस्य एक दूसरे को यथाशक्ति अपना शिकार बनाते हैं। जब जिसका मन आया उसने दूसरे पर अत्याचार किया, मानव का रक्षक हों तब उचित लगता है किन्तु रक्षक ही भक्षक बन जाये तब किसे अच्छा लगेगा। आज तो यह नियम बन गया है कि छोटी मछली को बड़ी मछली निगल जाती है उसी प्रकार छोटे व्यापारी को बड़ा व्यापारी समाप्त कर देता है। छोटे शिक्षक का बड़ा शिक्षक उपहास करता है। इसी प्रकार प्रत्येक मानव आज अपने से निर्बल का भक्षक बनता जा रहा है औरह म चुपचाप शान्त भाव से यह सब देखते हैं। अन्याय को देखने वालाल भी अन्यायी होता है। किन्तु परमेश्वर ने तो एक मनुष्य को प्रत्येक ओर से दूसरे मनुष्य की रक्षा का भार सौंपा गया है। देखें वेदोपदेश–

पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः। ऋग्वेद ६–६५–१२

एक मनुष्य प्रत्येक ओर से दूसरे मनुष्य की रक्षा करे। यह उपदेश केवल हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई या फारसी समाज के लिए नहीं अपितु विश्व में बसने वाले इस समस्त मानव परिवार के लिये हैं। जब मानव की रक्षा मानव करेगा, तब विश्व से अन्याय समाप्त होगा तभी मानवों में शान्ति होगी। तभी मानव किसी ज्ञान कार्य का अध्ययन करेगा। तब ही जीवन सुन्दर बनेगा। परमपिता परमेश्वर ने अन्याय के नाश हेतु वैदिक वर्ण व्यवस्था में क्षत्रिय का चयन किया है। यह क्षत्रिय भी कर्म के आधार पर ही हैं, जन्म के आधार पर नहीं। जो क्षत्रिय धर्म का पालन करता हो अर्थात सकल समाज की रक्षा करने का दायित्व अपने पर ले, वही तो क्षत्रिय है। क्या आज का क्षत्रिय कहलाने वाला मानव वास्तव में क्षत्र धर्म पालन करता है। कहीं वही क्षत्रिय भक्षक तो नहीं बन गया, यह चिन्तन हम सबको करना है। क्या वह क्षत्रिय है जो मदिरा पान करे, क्या वह क्षत्रिय है जो समाज की माताओं–बहनों को बुरी व गन्दी नज़र से देखें, नहीं वह क्षत्रिय नहीं हो सकता। सीमा पर बैठा सैनिक जो पवित्र धरती माता के निमित अपना जीवन अर्पण कर रक्षा का दायित्व लिये दुश्मन की प्रतीक्षा में है वह क्षत्रिय हो सकता है। अपनी माताओं बहनों से गुण्डों द्वारा किये जा रहे बलात्कार का सामना करने वाला भाई क्षत्रिय हो सकता है, निर्बल वर्ग को परेशान करने वाले का विरोध करने वाला क्षत्रिय हो सकता है। आज हमें अनेक प्रकार से अन्याय का शिकार बनाया जा रहा है। देश के ही कुछ आराजकतत्व जो देश का विभाजन करना चाहते हैं, हमें उनका भी जमकर विरोध करना है जो देश में अव्यस्था फैला रहे हैं। जो साम्प्रदायिकता का विष मानव जीवन में घोल रहे हैं, उनका विरोध भी हमें ही करना है क्योंकि सब परमेश्व के पुत्र स्वयं में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र हैं वेदोपदेश के अनुसार।

ब्रह्मणोऽस्य मुख्यमासीद बाहु राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदम्प्रास शूद्रो अजायता।
यजु ३१.११

भाव–मुख्य ब्राह्मन हैं भुजायें क्षत्रिय उदर वैश्य है, और पैर शूद्र हैं। हमारा शीश ब्राह्मण है जो ज्ञान की सोचता है हमारी भुजायें क्षत्रिय हैं जो रक्षा करती हैं हमारा उदर वैश्य है जो व्यापार कर शरीर को रक्तादि देता है। हमारे चरण शूद्र हैं जो जीवन को गति प्रदान करते हैं।

वैदिक वर्ण व्यवस्था जहाँ हमारे शरीर के लिए उत्तम है, वही समाज रूपी शरीर के लिए अति उत्तम है आज एक न्यायाधीश धन के बल पर अन्यायी अत्याचारी कापक्ष ले सकता है। आज का सैनिक अपनी धरती माता के शरीर को विदेशियों के हथ बेच सकता है। यह सब अन्याय नहीं तब और क्या है? इस अन्याय को अपने मानव समाज से मूल नष्ट करना होगा, अन्याय समाज का चिन्तन शून्‍ हो जायेगा तब वैदिक संस्कृति का रक्षक कौन होगा। परमपिता परमेश्वर जिसको जाने अनजाने प्रत्येक मत मजहब व सम्प्रदाय ने स्वीकारा है। वह तो हमें उपदेश देता है कि तुम मानवों की ही नहीं अपितु प्राणियों की ओर से भी असावधान मत रहो।

मा जीवेभ्यः प्रमद।। अथर्व.

भाव–प्राणियों की ओर से असावधान मत रहो अर्थात सचेत रहो। यह वाक्य क्षत्रियों को सम्बोधित करके कहे गये हैं कि हे क्षत्रिय तुम प्राणियों पर हो रहे अत्याचारों की ओर से उदासीन मत रहो–सदा सचेत रहो रक्षक होने के नाते तुम्हारा परम् कर्तव्य है कि सदा प्राणियों की रक्षा में ही अपना समय लगाओ। मानवों पर जो अत्याचार दानव कर रहे हैं तुम उन दानवों को समाप्त करने में हिच–किचाओं मत। सदा आगे रहो अन्याय का विरोध करना आवश्यक है अन्यथा बुजदिल कायर कहलाओंगे वीर होता है, कायर नहीं।

उठो.जागो और समाज के श्रेष्ठ मानवों से सनातन संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर कर्तव्य पथ की ओर बढ़ो व अन्य मानवों को भी अपने ज्ञान का उपदेश दो। वेदोपदेश क्षत्रियों को–

वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।। यजुर्वेद

हम सावधान रहकर राष्ट्र के नेता बन राष्ट्र के जन–जन को जगाने एवं राष्ट्र में ज्ञान व न्याय की ज्योति को जलायें।

आज हमारे क्षत्रिय को जागृत होकर सकल मानव समाज अन्यायरूपि राक्षस को समाप्त करना है, बाहुबल परीक्षण का समय आया है। तब क्षत्रिय जागृत हों व मानव समाज पर हो रहे अत्याचारों को बन्द करें व मानव समाज की ही नहीं प्राणी मात्र की रक्षा प्रत्येक ओर से करें। यही तो कर्म है क्षत्रिय का, आज सकल विश्व का मानव चीत्कार कर रहा है उसे कोई न्याय देने वाला नहीं। क्योंकि प्रमुख न्यायकारी अर्थात परमात्मा को तो हम जानते ही नहीं तब हमें कौन न्याय देगा। अपने द्वारा किये गए पापों का स्मरण कर मानव रोता है। अज्ञान व अन्याय की अग्नि में जलता हुआ मानव कहीं दानव रूप धारण न कर ले। उससे पूर्व ही हे क्षत्रिय जागों तुम महाराणा प्रताप व छत्रपति शिवाजी के वंशज हो। जिन्होंने अत्याचारी अन्यायी अकबर व औरंगजेब से जीवन भर टक्कर ली। तब क्या आज के अन्यायी से तुम डर जाओगे, वंश परम्परा को कर्म के आधार पर जीवित रखने का, कार्य क्षत्रि तुम्हें करना है। स्मरण करो महाभारत के कुरूक्षेत्र में अर्जुन ने कहा–हे योगीराज मैं किस पर तीव चलाऊँ, कैसे गाण्डीव उठाऊँ, यह सभी तो मेरे गुरूजन, चाचा, मामा, भाई हैं। तब योगीराज कृष्ण ने अर्जुन को जो पवित्र उपदेश दिया क्या वह उपदेश हमें स्मरण हैं?

परित्रारणाय साधुनाम विनाशयच दुष्कृताम।।
–गीता

हे अर्जुन–अन्यायी भाई हो, चाचा हो, या गुरू किन्तु यदि वह अन्याय का पक्ष लेता है, न्याय का नाश करता है तब उसका नाश करने में कभी पीछे मत हटो। यही छात्र का धर्म है अथार्त जो सज्जन हैं उनका मान–सम्मान करो जो दुष्ट है उनका विनाश करने में मत घबराओं तभी तो धर्म का पालन होगा। तब हे क्षत्रिय आज अन्याय के विरूद्ध गाण्डीव उठाओं प्रमाद त्यागो बहुत हो गया सहते–सहते अब अन्याय को सहन मत करो यही युगधर्म है एक बार किसी ने महातमा गांधी से प्रश्न किया कि यदि कोई गऊ माता को काट रहा हो तो क्या किया जाये। महात्मा गांधी ने उत्तर दिया कि गऊ माता के स्थान पर अपना शीश रख दो और यह प्रक्रिया तब तक चलने दो जब तक कसाई के मन में दया न आ जाये और वह गऊ माता को गऊ प्रेमी अपनी गर्दन को कटवाता रहे। उस समय परम पूज्य माननीय श्री बालगंगाधर तिलक जी ने कहा था कि गांधी जी के कार्यकर्तापूर्ण अहिंसावादी निर्णय से तो सभी गऊ प्रेमी समाप्त हो जायेंगे फिर कोई गऊ माता का नाम भी लेना पसन्द करने से न माने तुम उसी की गर्दन काट दो न अन्याय रहेगा न अन्यायी, निर्णय आपको करना है कि आप गांधी जी की तथाकथित अहिंसा को स्वीकार करना चाहते हैं, या माननीय तिलक के ओजस्वी न्यायकारी वक्तव्य को, आज यदि हम एक के बाद एक गर्दन के अन्यायी, अत्याचारी के सम्मुख रखते रहें तब क्या न्याय बचेगा? तब तो संसार में अन्याय का साम्राज्य ही होगा। इससे सुन्दर यह है कि हम उस अन्यायी को हमी समाप्त कर दें जिससे अन्याय रूपी कोई दुष्कर्म धरा पर न बचे। आज हमारा क्षत्रिय महात्मा गांधी की नीति को अपना रहा है। भोगविलास एवं धन के नशे में चूर क्षत्रिय को प्रमाद को त्यागकर क्षत्रिय कर्म क्षेत्र में उतर कर प्रत्येक अन्यायी विरोध करना है। वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द के शब्दों में–

प्रत्येक के साथ प्रीतिपूर्वक, यथायोग्य कर्मानुसार बर्तना चाहिये। कायरता का सिद्धान्त नहीं कि कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे और तुम दूसरा गाल भी बढ़ा दो। क्षत्रिय का कर्म है कि यदि हाथ बढ़े तब ही उसको काट दे। तब तो अन्याय समाप्त होगा यदि अन्याय समाप्त होगा तभी विश्व में शान्ति होगी। तब हे क्षत्रिय आओ मोह त्यागो अन्यथा का नाश करो व विश्व में चक्रवर्ती सार्वभौम वैदिक साम्राज्य की स्थापना करो ऋग्वेद की पवित्र वाणी द्वारा हम अपने समाज से व सकल विश्व से अज्ञान का नाश कर ज्ञान का प्रकाश करने में समर्थ हैं, यजुर्वेद की पवित्र वाणी द्वारा हम अन्याय का नाश कर न्याय की स्थापना करने में सक्षम हैं तब आयें पवित्र वेदवाणी के मार्ग दर्शन से अपना समाज व सकल विश्व का जीवन सार्थक सुखी व शान्तिमय बनाये।

संस्थापित–1885 ओ३म् फोन नं0–0522–2286328
श्रीमद्दयानन्दाब्द–195 कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पत्रांक–01 /असाधारण (नैमित्तिक) सभा/ लखनऊः दिनांक– 01 अप्रैल, 2019

सेवा में,

सम्माननीय सभा पदाधिकारीगण, अन्तरंग सदस्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य, सभी आर्य समाजों, जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं अन्य संस्थाओं के माननीय प्रतिनिधिगण।

महोदय नमस्ते,

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ का असाधारण (नैमित्तिक) अधिवेशन दिनांक 21 अप्रैल, 2019 दिन रविवार (बैसाख कृष्ण द्वितीया) को प्रातः 11.00 बजे से प्रधान/का0 प्रधान–डॉ0 धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में गुरूकुल वृन्दावन, मथुरा में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत तिथि, समय व स्थान पर पहुँचकर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

विषय सूची

1– उपस्थिति।
2– ईश प्रार्थना।
3– गत साधारण सभा की कार्यवाही की सम्पुष्टि।
4– आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक–10 मार्च, 2019 को विषय संख्या–08 में पारित निर्णय के क्रम में गुरूकुल वृन्दावन (मथुरा) की भूमि पर भारतीय सेना के शहीद जवान के परिवार के बच्चों के शिक्षा हेतु "राजा महेन्द्र प्रताप जी शहीद आश्रित आवासीय गुरूकुल विद्यालय" के नाम से शिक्षण संस्थान के शिलान्यास किये जाने पर विचार।
5– अन्य विषय प्रधान/का0 प्रधान जी की अनुमति से।
6– दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती)
सभा मन्त्री
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश
मोबाईल–09837402192

माता-पिता के घर पर बेटे का अधिकार नहीं

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

हाईकोर्ट का आदेश

- बेटा सिर्फ अभिभावकों की दया पर ही मकान में रह सकता है
- बुजुर्ग द्वारा अपने बेटे-बहू को घर से निकाले जाने पर फैसला सुनाया

दिल्ली हाईकोर्ट ने मंगलवार को एक अहम फैसला सुनाते हुए टिप्पणी की कि माता-पिता की मेहनत से बनाए गए मकान में बेटे का कोई कानूनी हक नहीं है। वह सिर्फ अपने अभिभावकों की दया पर ही घर में रह सकता है। फिर चाहे बेटा विवाहित हो या अविवाहित।

जस्टिस प्रतिभा रानी ने एक बुजुर्ग दंपति द्वारा बेटे और बहू को घर से निकालने के मामले में यह फैसला सुनया। अदालत ने दंपति के बेटे व बहू की ओर से दाखिल अपील को खारिज कर दिया। दोनों ने निचली अदालत के उस फैसले को चुनौती दी थी जिसमें माता-पिता के पक्ष में आदेश दिया गया था। निचली अदालत ने बेटे और बहू को घर खाली करने को कहा था। हाईकोर्ट ने कहा कि चूंकि माता-पिता ने संबंध अच्छे होने के वक्त बेटे को घर में रहने की अनुमति दी थी, इसका यह मतलब नहीं कि वे पूरी जिंदगी उसका बोझ उठाएं।

अदालत ने कहा कि मां-बाप ने खुद से कमाकर घर लिया है तो बेटा विवाहित हो या अविवाहित, उसे घर में रहने का कानूनी अधिकार नहीं है। वह उसी समय तक रह सकता है जब तक अभिभावक अनुमति दें।

यजुर्वेद पारायण सम्पन्न

आर्य समाज कटरा जनपद शाहजहाँपुर में दिनांक २३, २४ एवं २५ मार्च २०१६ को आर्य संन्यासी वैदिक भजनोपदेशक स्वामी श्रद्धानन्द जी बदायूँ ने वेद प्रचार। में प्राप्त दक्षिणा से यर्जुववेद पारायण यज्ञ एवं वैदिक धर्म प्रचार सत्संग का आयोजन किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य चन्दन मित्र वैदिक प्रवक्ता, गुरूकुल महाविद्यालय रूद्रपुर एवं वेदपाठी पं० मुकेश शास्त्री बिहार रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी कर्णदेव जी ने किया। आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती प्रेमलता आर्या बलवीर सिंह, कृष्ण पाल वकील एवं शास्त्री जी सहित अनेक आर्य कायकर्त्ताओं ने कार्यक्रम की उत्तम व्यवस्था की।

आर्य समाज सुमेरपुर बराबंकी का वार्षिकोत्सव

२४, २५, २६ मई से

भजनोपदेशक- बहन यशोदा जी- बदायूं
विमलदेव जी बरेली,
उक्त कार्यक्रम में आप सादर आमंत्रित हैं
निवेदक- रामनरायण शास्त्री
अंतरंग सदस्य, आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0

आर्य समाज बनवारी-बु०शहर

२३, २४ एवं २५ मार्च को आर्य समाज बनवारी पुर बु०शहर का वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने आकर अपना आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य ओमव्रत जी महोपदेशक श्री नरेन्द्र जी आचार्य, मोहन लाल आर्य एवं सत्यवीर सिंह आर्य भजनोपदेशक द्वारा तीनों दिन ज्ञान की वर्षा होती रही। श्री कृण जी आर्य प्रधान द्वारा सुन्दर व्यवस्था की गई जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर जिला हापुड़

२७, २८, २६ एवं ३० मार्च २०१८ को आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर जिला हापुड का १०१वाँ वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया २७ मार्च को नगर में एक जन जागरण रैली के रूप में शोभायात्रा निकाली गई बाद में सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरान्द सरस्वती गुरूकुल पूठ ने ध्वजारोहण कर उद्बोधन देकर सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन किया शोभयात्रा में गुरूकुल पूठ के आचार्य दिनेश जी के नेतृत्व में ब्रह्मचारी भी सम्मिलित हुए आर्य समाज हापुड़, स्याना, दतियाना, बहादुरगढ़, पसवाड़ा, शाहपुर मानक चौक के आर्यों ने भी भाग लिया शेष तीन दिनों में वैदिक विद्वान् हरिशंकर जी अग्निहोत्री आगरा, दिल्ली से दिनेश दत्त जी तथा म० जगमाल सिंह आर्य, आर्य वीरांगना अर्चना आर्या घोड़ी के भी प्रभावशाली भजन हुए वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध श्री राजपाल शास्त्री जी ६६ वर्षीय हैं प्रभावशाली भाषण दिया आप स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरूकुल झज्जर के साथी हैं सभामन्त्री जी २ दिन सभा में रहे हरीशचन्द्र आर्य, अनिल आर्य, नीरज आर्य, शशीकान्त आर्य, व्रजभूषण गर्ग अशोक आर्य, ठा० महेन्द्र सिंह आर्य, आदि–आदि का व्यवस्था में विशेष सहयोग रहा व्रजघाट से मुनेन्द्र भारत एवं सं०वि० गढ़ के छात्रां की तथा अमर पाल सिंह आर्य प्रमोद आचार्य की उपस्थिति भी प्रशंसनीय रही।

–अनिल कुमार आर्य
उपमंत्री जिला सभा हापुड़

आर्य समाज ट्रस्ट साधु आश्रम टिटोड़ा मु० नगर उ.प्र.

२०, २१, २२ मार्च २०१६ को होली के पावन पर्व पर वेद पारायण यज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन का अयोजन किया गया प्रसिद्ध योगाचार्य स्वामी कर्मवीर जी महाराज की यह जन्म स्थली है इस ग्राम के अमन सिंह शास्त्री जैसे लगभग १० आचार्य हैं यहाँ का सम्मेलन बड़ा प्रभावशाली होता है। पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी मु० गौतम नगर दिल्ली का विशेष आशीर्वाद प्राप्त है सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती भी गत २० वर्षों से निरन्तर प्रतिवर्ष जाते हैं यज्ञ ब्रह्मा शिवकुमार शास्त्री जी पं० रामनिवास जी श्री जबर सिंह खारी डा० उमा आर्या, अचार्य रणधीर शास्त्री आदि-आदि विद्वान पधारे और सम्मेलन सफल किया संयोजक मण्डल में श्री मांगेराम आर्य, श्रवण कुमार आचार्य चन्द्रभूषण, आचार्य सोमदत्त शास्त्री सहित आर्यवीर दल के वीरों ने सेवा कार्य किया उत्सव की सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है।

आर्य समाज टीला पाण्डवान् पट्टी हस्तिनापुर मेरठ

पिछले ६६ वर्षो से प्रतिवर्ष होली के पावन पर्व पर एक वेद पारायण यज्ञ होता है १६७४ से प्रतिवर्ष स्वामी धर्मेश्वरानन्द की गुरूकुलपूठ यज्ञ ब्रह्मा होते हैं मं तथा गुरूकुल के ब्रह्मचारी वेद पाठी होते हैं म० बेगराज आर्य भजनो पदेशक आया करते थे आगामी वर्ष शताब्दी मनाई जायेगी जिसमें पूरे क्षेत्र से हजारों की संख्या में लोग आकर आहुतियाँ प्रदान करते हैं। इस वर्ष सुमित्रा आचार्य म० गजराज सिंह स्वामी विजयानन्द सरस्वती, आचार्य प्रमोद कुमार जी आदि-आदि के प्रवचन हुए संयोजन वेद प्रकाश शास्त्री ने किया बाद में भण्डारे का अयोजन किया गया कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

—रणधीर कुमार शास्त्री, अधिष्ठाता वेद प्रचार, मेरठ

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
....
....

100 प्रतिशत मतदान करो

सारे मुद्दे और समस्याओं को पहले ध्यान करो।
वतन परस्त प्रत्याशी को
फिर सौ प्रतिशत मतदान करो।।
कुर्सीलोलुप आज अनेकों पास तुम्हारे आयेंगे।
लाखों देगें प्रलोभन और तनिक नहीं शरमायेंगे।।
जो अपने कृत्यकर्मों का भी करते न अहसास कभी,
वो भी लम्बे वायदों का दिलाते हैं विश्वास सभी।
पद–प्राप्ति कर निज–कृत कथनों से भी फिसले जो,
दलबल, स्वार्थी गिरगिट सम रंग अनेकों बदलें जो।
जिनको अपने कर्म और कर्त्तव्यों का ध्यान नहीं,
पद की भी गरिमा न समझे धर्म और ईमान नहीं।
इज्जत की कीमत न जाने, मत उनका सम्मान करो।
वतन परस्त प्रत्याशी को,
फिर सौ प्रतिशत मतदान करो।।
अच्छा व्यक्ति चुनने का है जो तुमको अधिकार मिला,
चूको मत मौका पाके अब दो अपना हथियार चला।
वोटिंग है कर्त्तव्य नागरिक जन ऐसा अहसास करो,
मतदान यज्ञ में हवियों को दे सब पावन आकाश करो।
कभी न लालच में आओं और बेचो स्वाभिमान नहीं,
अपने फर्ज़ भूल बैठा वो भी कोई इन्सान नहीं,
वोट अस्त्र को लेकर हर इन्सान खड़ा हो जायेगा
दुनियाँ में कद भारत का तब और बड़ा हो जायेगा।
मतदान करेंगे देशभक्त को ऐसा सब ऐलान करो।
वतन परस्त प्रत्याशी को
फिर सौ प्रतिशत मतदान करो।।
फुटपाथों पर मरने वाले मजदूरों का ध्यान नहीं,
रोटी, कपड़ा भी दुर्लभ हैं उनका कोई मकान नहीं।
प्रातः काल मिल जाये तो भोजन सायंकाल नहीं
अपने भारत में रहते हैं क्या ऐसे कंगाल नहीं?
इनकी उन्नति और विकास के वे नेता हत्यारे हैं,
जिनकी बैठी हुई पीढ़ियाँ स्विस बैंकों के सहारे हैं।
जानो वोटों की कीमत और अपने को पहचानों अब,
सौ प्रतिशत मतदान करो यह बात हमारी मानो अब।
योग्य नेता चुनकर के कष्टों को पर्यवसान करो।
वतन परस्त प्रत्याशी को
फिर सौ प्रतिशत मतदान करो।।

अरविन्द कुमार "निर्गुण", चाटन, सम्भल (उ०प्र०)

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कानपुर नगर के आर्य महासम्मेलन से लिया गया छायाचित्र

गुरुकुल महाविद्यालय रूद्रपुर तिलहर शाहजहाँपुर के वार्षिकोत्सव से लिया गया छायाचित्र

स्वास्थ्य चर्चा :-

गर्मी के कारण शरीर का तापमान सामान्य से अधिक बढ़ जाता है जिसकी वजह से कई गम्भीर समस्याएं जैसे उल्टी, दस्त और डीहाइड्रेशन आदि की आशंका बढ़ जाती है। फिटनेश एक्सपर्ट, किरण साहनी के मुताबिक एक स्वस्थ इंसान के शरीर का सामान्य तापमान ३७ डिग्री सेल्सियस तक होता है। गर्मियों में जब वातावरण का तापमान ४० डिग्री से ऊपर पहुँच जाता है तो इसका प्रभाव शरीर के तापमान पर भी पड़ता है। यदि शरीर का औसत तापमान बढ़ जाए तो इसके कई अंगों को क्षति पहुंच सकती है। सेहतमंद रहने के लिए खासतौर पर गर्मी के मौसम में खानपान के मामले में एहतियात बरतने की जरूरत होती है। इसके लिए कुछ खास खाद्य पदार्थों को अपनी डाइट का हिस्सा जरूर बनाएं–

दही देगा भीतर से ठंडक– सेहतमंद रहने के लिए गर्मी के मौसम में दही जरूर खाएं। आसानी से उपलब्ध दही शरीर को भीतर से ठंडा रखकर गर्मी के मौसम में आपको सेहतमंद रखेगा। आप चाहें तो खाने के साथ दही खा सकती हैं या फिर दही में फलों को छोटा–छोटा काटकर फ्रूट रायता बनाकर भी खा सकती हैं।

छाछ व लस्सी से मिलेगी ऊर्जा– छाछ व लस्सी दही का दूसरा प्रकार होता है यह भी दही की तरह स्वास्थ्यवर्धक होता है। जब दही को फेंटकर मक्खन बनाते हैं तो उससे जो पानी बचता है उसे छाछ कहते हैं। हमेशा फ्रेश छाछ पीने की ही कोशिश करें। स्वाद बढ़ाने के लिए आप इसमें धनिया पत्ता, जीरे का पाउडर व नमक मिला सकती हैं। यदि आपको छाछ का स्वाद पसंद नहीं तो आप दही को फेंटकर उसमें थोड़ा पानी व चीनी मिलाकर मीठी लस्सी बनाकर पी सकती है। गर्मी में छाछ व लस्सी पीने से ऊर्जा बनी रहती है।

खीरे का कमाल– खीरे में बहुत अधिक मात्रा में पानी व जरूरी पोषक तत्व होते हैं। ज्यादातर लोग खीरे को बस सलाद में लेते हैं। पर, गर्मी के मौसम में सेहतमंद रहने के लिए हर दिन कम–से कम दो तीन खरीा जरूर खाएं। याद है आप बचपन में खीरे के ४ फांक करके उसमें नमक और मिर्च लगाकर खाती थीं। यदि गर्मी में आप बहुत बेचैनी या घबराहट महसूस करें तो खीरे का जूस निकालकर उसे तुरंत पी लें। शरीर का तापमान नियंत्रि हो जाएगा। खीरे का सेवन त्वाचा के लिए भी फायदेमंद होता है।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक – मुद्रक –प्रकाशक –श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रुप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।